सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली | श्री साई शके : 32
अंक – 127 | जनवरी – 2014

ॐ

।। ॐ श्री साईनाथाय नमः।।

।। ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः।।

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरू बंधुभगिनीयों से

नया साल 2014 श्री जगतगुरू श्री साईनाथ महाराज सद्गुरूनाथ दादा और अन्य सभी पुण्य विभूतियों की दुआ से आपको, आपके परिवार को और अन्य सभी व्यक्तियों को लाभदायक हो, जगत में सभी को ऐहिक और पारमार्थिक उन्नत्ति का लाभ हो तथा श्री गुरू की दुआ से सभी को सुख–शांति तथा समाधान प्राप्त हो, यही सभी के चरणों में विनम्र प्रार्थना है।

आज हम सभी के लिए, विशेषतः भारत की जनता के लिए यह साल महत्वपूर्ण है। इस साल हमारा प्रथम कर्त्तव्य है कि पॉलिटिकल गोष्टी न करे और न ही पॉलिटिक्स पर कमेन्ट्स करने के बदले राष्ट्र के लिए दी हुई प्रार्थना बोले। देश को, श्री गुरूकृपार्शीवाद की आवश्यकता है और हमारी प्रार्थना नये अनुकूल विचारों से इस देश का हित ही होगा और हिन्दुस्तान एक नई उन्नत्त अवस्था में बुलंद होगा, यह हमें अनुभव तथा यकीन होना चाहिए। इसी कर्त्तव्य के साथ इस साल के पहले महिने में – जनवरी 2014 में दो महत्वपूर्ण दिन हम गुरू भक्तों को मनाने है :

1. **मकर संक्रांती : 14–01–2014**
2. **श्री सद्गुरूनाथ दादा महाराज जयंति : 30–01–2014**

मकर संक्रांती :

इस दिन सूर्य अपनी एक राशी से दूसरी राशी में स्थित्यंतर होता है। 'संक्रांती' याने 'सक्रमण' मतलब सूरज का 'दक्षिणायन' पूरा होकर 'उत्तरायण' आरम्भ होता है। वह उत्तरायण मतलब ऊपर की अवस्था में स्थित्वंर करता है। हमारे जीवन में सूरज और चाँद का विशेष महत्व है। सूरज आत्मा को Represent करता है (दर्शाता) है। और चाँद अपने शरीर को/काया को दर्शाता है। मतलब हमारी आत्मा सूरज की तरह तेजस्वी होनी चाहिये और शरीर चाँद की तरह शीतल होना चाहिए, लेकिन आज जीवन बिताते समय हम परस्पर विरोधी बर्ताव करते हैं, याने हमारे देह और देहिक विषय सूरज की तरह प्रखर हो गये है और आत्मा अंदर जैसे सो रही है, चाँद की तरह ठंडा हो गई है।

इस नए साल पर सबसे पहले हमें यह निश्चय करना है कि योग्य आचार–विचार और आहार से परमार्थिक प्रश्नावली का अनुसरण करके हमारा देह चाँद की तरह शीतल हो जाये तथा हमारे बर्ताव से औरों को समाधान मिले और नित्य नियमित उपासना से हमारा सोई हुई आत्मा जाग कर, तेजस्वी हो जाये।

आज के दिन मकर संक्रांती को हमें अपने जीवन का सिंहावलोकन (Detail Analysis) करना होता है। सूरज एक राशी से दूसरे में संक्रमण करता है मतलब आने वाली राशी में, समय में सुख–शांति और समाधान प्राप्त होने के लिए, पिछली राशी में हमसे जो भी गलतियाँ हुई, अविचार प्रकट हुए वह आने वाले समय में न हो यह निश्चय करना होता है। श्री गुरू की दुआ से हमारे जीवन की प्रतिकूलता निकल जाये और आने वाले समय में अपनी सूरज रूपी आत्मा, गुरूकृपाशीर्वाद से अगली उन्नत अवस्था में स्थित्यंतरीत होना याने सच्चे माईने में मकर संक्रांती मनाना। इस दिन हम तिल, गुड़ खाते हैं, कई लोग आसमान में पतंग उड़ाते हैं। पतंग उड़ाना मतलब आत्मा को उन्नत्त अवस्था में लेकर जाना, इसलिए आसमान में पतंग उड़ता देखकर सभी को आनन्द होता है। लेकिन आध्यात्मिक अवस्था में यह उत्सव मनाते समय दूसरे की पतंग को काटना नहीं है, यह याद रखना है और अगर हमारी पतंग कट गई तो भी वही उम्मीद लेकर फिर पतंग हवा में उड़नी है, यह निश्चित है। तिल, गुड़ खाने का मायना यह है कि हमारा जीवन गुरूकृपा से इतना शुद्ध हो जाये कि उसमें तिल इतना भी दोष/प्रतिकूलता न रहे और गुड़ के जैसी मिठास सिर्फ खाते समय नहीं तो उसी मुँह से बोलते समय भी दूसरों को अनुभव हो। हमारा मुँह जो हमेशा गीला रहता है उसमें से आने वाले शब्द सूखे न हो बल्कि प्रेम से गीले होकर शब्द बाहर निकले और सुनने वाले को श्री गुरू के कृपाशीर्वाद का अनुभव दे, उनके प्रेम का अनुभव दे।

यह कब होगा, जब श्री गुरू का आस्तित्व हमारे माध्यम में साकार होगा तभी हमारे बर्ताव से हमार आचार–विचार, उच्चार से श्री गुरू का प्रेम औरों को अनुभव करायेगा। श्री गुरू हमारे माध्यम में साकार होना यानी उनका जन्म, हमारे माध्यम में होना और इस अवस्था तक पहुँचने की याद दिलाने के लिए दूसरा महत्वपूर्ण दिन हम मनाते है, जो कि,

श्री सदगुरूनाथ महाराज दादा का जन्म दिन :

पौष अमावस्या, इस साल यह दिन 30–01–2014 को है।

जब हम इस कार्य में पहली बार अपनी परेशानियाँ लेकर आये थे तक हम सभी ने यह सोचा होगा कि यह गुरू, (वं. दादा) हमें क्या दे सकते हैं (ऐहिक) और कितना ऐहिक सुख दे सकते हैं?

उसी समय वंदनीय दादा जी बिल्कुल उल्टा विचार कर रहे थे कि, आया हुआ भक्त यह खुदा का बंदा है। अभी तक उसने जो भी कमाया है वह ऐहिक सुख (देहिक बातें) उन्हें यहीं छोड़कर जाना है और आज भी वहीं मांगने के लिए वह आया है। लेकिन जो उसे सच्चे माईने में आगे लेकर जाना है (आत्मिक शक्ति) वह उसके पास है ही नहीं। वह आत्मिक तत्व प्रदान करके उसका उद्धार करना और उसे सम्भालने की आदत आने वाले भक्त को लगाना यह मेरा कर्त्तव्य है और यही कृपाशीर्वाद है, जो मुझे उसे देना है।

आज अगर हम खुद की तरफ देखें तो हमें ऐहिक कितना मिला इससे ज्यादा हमें समाधान कितना मिला और उसके लिए हम गुरूकृपा के कितने ऋणी महसूस कर रहे हैं, यह विचार महत्वपूर्ण है।

आज भी हम गुरूकृपा का लाभ इस प्रकार लेते है जैसे किसी डॉक्टर के पास जाते हैं। मतलब कोई शारीरिक व्याधी हुई, डॉक्टर से दवाई लेकर आये और ठिक हो गये। फिर डॉक्टर की याद तब आती है जब फिर कोई शारीरिक व्याधी हो जायेगी। उसी प्रकार परेशानी आई तो कार्य केंन्द्र पर आकर निराकरण ले लिया, निराकरण से परेशानी का हल हो गया तो हम फिर से अपने रोजमर्रा की जिन्दगी में मशगूल हो गए, फिर परेशानी आई तो फिर आये। ऐसे कब तक काम चलेगा। "कृपाशीर्वाद" दवाई जैसी परेशानी के लिए ही सिर्फ नहीं है, तो नियमित सेवा और साधना से अपने अंतर्रआत्मा को मजबूत करना है। हमारी आत्मा की वजह से हमें यह देह मिला है, उस देह को मस्ती में रखने से हम दिन–रात मेहनत करते है। देह के लिए अच्छा अन्न, वस्त्र, करोड़ रूपये का घर, आत्मा उसके पुण्याई से प्राप्त कर देता है लेकिन फिर उस आत्मा को देह के तरफ से भी अन्न, वस्त्र, निवारा चाहिये। जब तक उसे वह नहीं मिलता तब तक हमें समाधान नहीं मिलता। इसीलिये जीवन में हमें कई लोग दिखते हैं जिनके पास सबकुछ ऐहिक सुख है लेकिन समाधान नहीं है। समाधान यह आत्मा की और मन की अवस्था है। आत्मा का अन्न मतलब नित्य उपासना, वस्त्र मतलब कृपार्शीवाद और निवारा मतलब गुरूमार्ग। जब आत्मा को यह प्राप्ति निश्चित रूप ये हो जाती है, तब प्राप्त हुए सुख में शांति और समाधान का अनुभव आता है।

इस समाधान, कृपाशीर्वाद से जब मन भरने लगता है तो आत्मा का कारण उदित होता है। गुरूमार्ग में, यह कारण उदित होना याने आत्मा को ऐसी भूक लगना कि जो समाधान उसे

गुरूकृपा से प्राप्त हुआ, उस प्रकार का समाधान उसके माध्यम से औरों को प्राप्त हो। मतलब गुरूकृपा पूरी तरह धारण होकर प्रवाहित हो, यह आत्मा की उन्नत अवस्था में हम सभी भक्तों को एक न एक दिन स्थित्यंतरीत होना है। तब हमारे माध्यम में गुरू तत्व धारण होकर साकार होने लगेगा मतलब गुरूतत्व का जन्म हमारे माध्यम में हो जायेगा, वही दिन वं. दादा का जन्म दिन सच्चे माईने में मनाया जायेगा। तब गुरूभक्त गुरू से एकरूप हो जायेंगे, इस अवस्था का अनुभव श्री गुरूकृपा से हर एक गुरूभक्त को प्राप्त होने वाला है। उसका ब्रहमानंद अनुभव करने के लिये हमें इस नये साल से और तैयारी करनी है, तभी श्री गुरू के गुण – दया, क्षमा, शांति हमारे माध्यम से प्रकट होने लगेंगे। हमारे माध्यम में अनेक अवगुण (दोष) होने के बावजूद हमें वंदनीय दादा जी ने इस महान गुरूकृपा में शामिल कर लिया। अब हमारा कर्त्तव्य यह है कि दूसरों के अवगुणों को नज़र अंदाज करके उन्हें कार्य में शामिल करे। वंदनीय दादा की गुरू भक्ति इतनी है कि वह भक्तों के दुर्गुणों को सद्‌गुणों में बदल देगी। लेकिन आने वाले हर एक भक्त को यह साध्य होने के लिए उसका प्रयत्न आवश्यक है। यही प्रयत्न 'परमार्थ प्रश्नावली' को सामने रखते हुए हम सभी को इस नये साल में अपनाना है, जिससे सच्चे माईने में वंदनीय दादा जी का जन्म दिन हम सभी इसी जन्म में वं. दादा तथा प.पू. साईनाथ महाराज की कृपा से मना सकें, यही उनके चरणों में प्रार्थना है।

"शुभं भवतु"

जनम–जनम का सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com, dadab6@hotmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible